आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 9 मई, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

## मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

## कुलपति सन्देश

### पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए देशी गोवंश व गौ आधारित उत्पादों का प्रोत्साहन जरूरी : कुलपति

भारत जैसे प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति वाले देश में पशु–पक्षियों को देव तुल्य माना जाता है। देश की दो तिहाई आबादी गांवों में निवास करती है, जिनकी आय का प्रमुख स्त्रोत कृषि व पशुपालन ही है। छोटे ग्रामीण परिवारों की आय में पशुधन का योगदान लगभग 16 प्रतिशत है। राजस्थान में पशुपालन शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में कृषि की सहायक गतिविधि ही नहीं बल्कि आर्थिक उन्नति का आधार भी माना गया है। 20वीं पशुगणना में भारत में कुल पशुधन 536.76 मिलियन है। गायों की संख्या 192.5 मिलियन है, जिसमें से देशी गोवंश की संख्या 142.11 मिलियन है। राजस्थान जैसे प्रदेश की शुष्क जलवायु, पानी की कमी, अनावृष्टि और चारे की कमी को सहन करने की क्षमता इन देशी गायों में होती है। प्रदेश में देशी गायों की मुख्यतः आठ नस्लें है। राठी, थारपारकर, कांकरेज, गिर, नागौरी, साहीवाल, मालवी व हरियाणवी नस्लें राजस्थान के विभिन्न जिलों की जलवायु के अनुसार पाली जाती है। पशुपालक देशी गोवंश के दूध उत्पादन के अतिरिक्त पंचगव्य उत्पाद से भी अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकता है। अनेक प्रगतिशील पशुपालकों तथा गौशालाओं द्वारा पंचगव्य का उत्पादन कर विपणन किया जा रहा है। दुग्ध के उत्पादों के मूल्य संवर्द्धन के साथ–साथ पंचगव्य से भी प्रगतिशील पशुपालक अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। अगर इन गव्य पदार्थो का पंचगव्य उत्पाद के निर्माण में उपयोग करें तो वे पशु जो दूध उत्पादन नहीं कर रहे हैं उनसे भी पशुपालक अपनी आय प्राप्त कर सकता है। इन पंचगव्य उत्पादों का चिकित्सा के अतिरिक्त कृषि खासकर जैविक खेती में जैव उर्वरक, जैव–कीटनाशक और जैविक खाद् के रूप में उपयोग किया जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों का कृषि भूमि और खाद्यान्नों पर दुष्प्रभावों को देखते हुए आजकल जैविक खेती व प्राकृतिक खेती को उत्तम माना जा रहा है। इसमें पंचगव्य खाद् एक बेहतरीन जैव उर्वरक सिद्ध हुई है। राज्य सरकार द्वारा गौसंवर्द्धन व पंचगव्य के प्रोत्साहन तथा इसमें अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए पृथक से गोपालन विभाग का गठन किया है, जो गौशालाओं का पंजीकरण कर उन्हें अनुदान प्रदान करता है। वर्तमान में राजस्थान में 2500 से अधिक पंजीकृत गौशालाएं है। गोपालन विभाग की पंचगव्य आधारित उत्पाद बनाने एवं विपणन करने वाली गौशालाओं को विशेष रूप से चयन कर उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर भी देशी गौसंवर्द्धन पर महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों में देशी गोवंश– राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेच, गिर व मालवी गायों के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना की है। जहां पर इन देशी गौ नस्लों का संवर्द्धन व संरक्षण किया जा रहा है। पशुपालक यहां से देशी नस्ल की गायों के रखरखाव व अन्य वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर अपना व्यवसाय शुरू कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकता है।

**प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग**

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

# विश्वविद्यालय समाचार

## यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी

### गाढवाला में समेकित बाल विकास पर हुआ संगोष्ठी कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 30 अप्रेल को यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढवाला के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित आंगनवाड़ी केंद्र पर महिला एवं बालिका विकास विभाग, बीकानेर के सहयोग से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ नीरज कुमार शर्मा ने ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छता, गर्भवती महिलाओं की देखभाल, एनीमिया दूर करने के उपाय एवं शिशुओं के टीकाकरण, कृमि नाशन तथा कुपोषण दूर करने सम्बंधित विभिन्न विषयों पर जागरूक किया। संगोष्ठी के दौरान समेकित बाल विकास की पर्यवेक्षक रेखा देवी ने केंद्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियां तथा महिला एवं बाल विकास के लिए विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। डॉ. कुसूमलता चिकित्सक जिला आयुर्वेद विभाग, बीकानेर ने महिलाओं सम्बधित विभिन्न बीमारियों में आयुर्वेदिक चिकित्सा का महत्व बताया। संगोष्ठी के आयोजन में पशु चिकित्सा प्रसार शिक्षा विभाग के स्नातकोत्तर छात्र संजय स्वामी एवं सत्यम् बिश्नोई का भी सहयोग रहा।

# सफलता की कहानी

## वकालत के साथ गिर नस्ल के डेयरी फॉर्म को किया स्थापित

श्री प्रशांत शर्मा, निवासी, रंगबाड़ी, तहसील–लाडपुरा, जिला–कोटा पशुपालन व्यवसाय को अपनाते हुए सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। ये पेशे से वकील है इनको पिछले 30 वर्षो से अधिक का वकालात का अनुभव है। दो वर्ष पूर्व इनके मन मे देशी गायों को पालने की जिज्ञासा जाग्रत हुई। इस दौरान इनका सम्पर्क पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा से भी हुआ एवं इन्होंने केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी भागीदारी निभाई। तत्पश्चात इन्होंने केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर किशनगढ़ व गुजरात से गिर नस्ल की गायों को लेकर आए और मार्च 2023 मे देशी गोवंश फॉर्म ग्राम–बंधा में स्थापित किया। इनके पास 90 बीघा कृषि भूमि है। गोवंशों के लिए सूखा व हरा चारा स्वंय की कृषि भूमि से ही उत्पादित हो जाता है। वर्तमान में इनके पास 18 गिर नस्ल की गायें व 12 छोटे गोवत्स है। इनके यहां प्रतिदिन लगभग 95 लीटर दुग्ध उत्पादन होता है, जिसे कोटा शहर के रहवासियों को शुद्ध दूध उनके घर पर ही उपलब्ध करवाते हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग पांच लाख रूपये तक हो जाती है। इन्होंने पशुओं के लिए पक्की पशुशाला भी बना रखी है जिसमे टीनशेड व पंखों की सुविधा भी उपलब्ध है। निकट भविष्य मे इनकी डबल स्टोरी पशुशाला बनाने की योजना है। श्री प्रशांत शर्मा ने पशुओं की देखभाल के लिए दो स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रखा है। इन्होंने उन्नत नस्ल का गिर सांड भी पाल रखा है जो कि किशनगढ़ से खरीदा है एवं आवश्कतानुसार अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को भी अपनाते हैं। अपने गोवंशों को उन्नत पोषण प्रदान करने हेतु ये पंजाब से साइलेज भी मंगवाते हैं। पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियों से अपने पशुओं को बचाने के लिए हर छः माह में टीकाकरण भी करवाते हैं। प्राथमिक पशुचिकित्सा हेतु दवाइयां अपने पास रखते हैं और जिनका उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से स्वयं कर लेते हैं तथा आवश्यक होने पर पशुचिकित्सक की सेंवाऐं भी लेते रहते हैं। पशु विज्ञान केंद्र द्वारा इनको समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी दी जाती है। ये कृमिनाशक दवा, खनिज लवण मिश्रण, टीकाकरण, पशुओं में नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान तकनीक एवं संतुलित पशु आहार आदि को पशुओं के लिए उपयोग में लेते है एवं जो जानकारी इनके पास है उनको अन्य पशुपालकों को भी साझा करते हैं। श्री प्रशांत शर्मा निकट भविष्य मे भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक को भी अपनी गायों में अपनाने के लिए प्रयत्नशील है। श्री प्रशांत शर्मा अपनी सफलता का श्रेय अपनी पत्नी श्रीमती विद्या शर्मा सहित अपने परिवार के सदस्यों के साथ–साथ पशु विज्ञान केंद्र, कोटा को भी देते हैं।

**सम्पर्क- श्री प्रशांत शर्मा, निवासी -रंगबाडी, तहसील- लाडपुरा, जिला-कोटा ( मो. 9414182681 )**

# पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

## पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 6, 12, 15, 20 एवं 27 अप्रेल को गांव सुजानगढ, भोजलाई, चाड़वास, ढेहरू भामुवान एवं गेड़ाप गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 8 एवं 12 अप्रेल को 3–एलएलपी एवं 1–केएसआर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं 22–28 अप्रेल को सात दिवसीय वैज्ञानिक बकरी पालन विषय पर एवं 29 अप्रेल को आयोजित एक दिवसीय केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 148 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 15, 20, 22, 26 एवं 29 अप्रेल को गांव मेडाचोली, ततामर, मूँडोता, मुरबारा एवं माडोली गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 15, 20, 25 एवं 27 अप्रेल को गांव दिहौली, अतरौली, कुम्हेरी, भोपालपुरा एवं फुलपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 4, 6 एवं 20 अप्रेल को गांव फूलदेसर, रोझा एवं ढाणी भोपालाराम तथा 16 एवं 27 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 136 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 18, 20, 23 एवं 25 अप्रेल को गांव नया सानवाड़ा, भुतगाव, अनगोर एवं मण्डवाडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 4, 12, 15 एवं 18 अप्रेल को गांव छपारा, निम्बी जोधा, शिमला एवं धोलिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 61 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6 एवं 25 अप्रेल को गांव नुक्कड़ एवं रामेश्वरपुरा में तथा दिनांक 23 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 58 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 2 अप्रेल को गांव काटून्डा में तथा 20 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 47 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 12, 16 एवं 18 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं दिनांक 22, 25 एवं 27 अप्रेल को गांव बादलवास, हसासर एवं मुकन्दगढ़ मण्डी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 130 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

## पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 2, 3, 12, 25 एवं 27 अप्रेल को गांव बीलुड़ा, लेम्बाला, नेपालपूरा, पारदा मोरू एवं छावड़ी गांवों में तथा दिनांक 23 एवं 27–29 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एंव तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 191 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा को गांव 5, 6, 18, 20, 23, 26, 27 एवं 29 अप्रेल को आला का बास, लोहरवाड़ा, करणसर रेनवाल, डुंगरी, बघाल, लक्ष्मीपुरा, झालरा एवं सांभर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 160 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 12, 16, 19 एवं 22 अप्रेल को गांव बड़गांव, अरनिया, गलाना, कुन्हाड़ी एवं मानसगांव गांवों में तथा दिनांक 25 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 2, 5, 8, 15, 23 एवं 30 अप्रेल को गांव सिकवाड़ा, चांदना, रामसीन, टाटोल, मुदतरासिलि एवं डीयोर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 97 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 4, 8, 12, 15, 16, 18, 20, 24 एवं 27 अप्रेल को गांव बालेसर, कुड़ी, इन्दोका, नादड़ी, सुरपुरा, तिंवरी, खोखरिया, गुड़ा एवं मंगल नगर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 239 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 15, 16, 22, 24 एवं 27 अप्रेल को गांव आंजी की ढाणी, बंसत जोजावर, गोलकी, जीवंतकला एवं बासोर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 8, 15 एवं 16 अप्रेल को गांव करनपुरा, गोगामेडी एवं डिडास गांवों में तथा दिनांक 29 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 111 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

# जैविक विधि द्वारा मुर्गियों का पालन एवं प्रबंधन

**परिचयः** ऐसी उत्पादन प्रबंधन इकाई जो कि बगैर किसी बाह्य उत्पाद (रासायनिक खाद एवं प्रतिजैविक औषधीयां) एवं मानव निर्मित उत्पाद उपयोग के, सिर्फ जैविक कृषि खाद्य उत्पाद, संसाधनों का उपयोग करें तथा जो कि घरेलु स्तर के संसाधनों पर आधारित हो।

**जैविक उत्पादन प्रणालीः** जैविक खेती एक समग्र उत्पादन प्रबंधन प्रणाली है जो कृषि पारिस्थितिकी तंत्र, स्वास्थ्य, जैव विविधता सहित, मृदा जैविक चक्र गतिविधि को बढ़ाता है। जैविक उत्पादन प्रणाली के विभिन्न निर्धारित मानक जैसे कि पशु कल्याण के लिए अधिक से अधिक ध्यान, वृद्धि संवर्धक, कृत्रिम उर्वरकों या कीटनाशकों का उपयोग किये बिना कम से कम 80 प्रतिशत चारा जैविक मानकों के अनुसार उगाया गया हो।

**जैविक उत्पादः** रासायनिक, कीटनाशकों, उर्वरक, योजकों और दवा का उपयोग किये बिना, जैविक उत्पादन प्रणाली पर पाला गया हो तथा जैविक मानकों के अनुसार उत्पादित, संरक्षित एवं प्रसंस्कृत किया जाये। उत्पाद स्वस्थ और पर्यावरण के अनुकूल, योजकों से मुक्त स्वास्थ्य जोखिम से मुक्त तथा भविष्य की पीढ़ी के स्वास्थ्य की रक्षा करता हो। उत्पाद हमारे पशुओं के संरक्षण में, ऊपरी मिट्टी की रक्षा, जैव विविधता के संरक्षण एवं सच्चे अर्थव्यवस्था का समर्थन करता हो।

## जैविक कुक्कुट पालन उत्पादन के व्यावहारिक पहलु एवं उपयुक्त मानक

कुक्कुट का जन्म एवं पालन एक जैविक कृषि पर हुआ हो, तथा प्रमाणन कार्यक्रम के बाद जैविक कुक्कुट की अनुमति होगी। कुक्कुट का प्रजनन प्राकृतिक होना चाहिए तथा साथ ही साथ कुक्कुट 100 प्रतिशत जैविक विधि से उत्पादित आहार खाया हो। जैविक कुक्कुट पालन में हार्मोन्स उपचार, एवं भ्रूण हस्तांतरण प्रौद्योगिकी की अनुमति नहीं है। संश्लेषिक वृद्धि संवर्धक पदार्थ, संश्लेषिक क्षुधावर्धक, परिरक्षक, कृत्रिम रंग पदार्थ, पशुओ के उपोत्पाद, विलायक द्वारा निकली गयी तेल केक, अमीनो एसिड, अनुवांशिक इंजीनियर जीवों या उसके उत्पादों के उपयोग अनुमति नहीं है। जैविक कुक्कुट पालन में प्राकृतिक चिकित्सा और विधियों, होमियोपैथी, आयुर्वेदिक चिकित्सा, सूचीभेदन पर जोर एवं रोगनिरोधी परंपरागत पशु चिकित्सा दवाओं के उपयोग अनुमति नहीं है। परम्परागत औषधियों का उपयोग तभी किया जाता है जब गैर एलोपैथिक विकल्प न उपलब्ध हो, जब इन दवाओं का उपयोग किया जाता है तब वैध रूप से रोक की अवधि दुगना रखते है जिससे उत्पाद में दवा का अवशेष न रह जाये तथा साथ ही साथ टीका का इस्तेमाल तभी किया जाएगा जब किसी क्षेत्र में रोग होने का पता है या उम्मीद कर रहे हैं और रोग की रोकथाम अन्य प्रबंधन तकनीकी से नहीं हो सकती है। आनुवंशिकी इंजीनियर टीकों का उपयोग नहीं किया जा सकता। जैविक कुक्कुट पालन में कीचड़, गंदे नाले युक्त पानी का प्रयोग भी वर्जित है।

**कुक्कुट प्रजनन प्रबंधनः** ऐसी नस्लों का चयन किया जाना चाहिए जो कि स्थानीय परिस्थितियों के अनुकुल हो तथा प्रजनन हमेशा प्राकृतिक तरीको से ही होना चाहिए, क्योंकि आनुवंशिकी अभियांत्रिकी से पैदा नस्ले एवं प्रजातियों का चुनाव जैविक कुक्कुट पालन हेतु प्रतिबंधित है। जैविक कुक्कुट पालन में हार्मोनों का उपयोग कर अधिक अण्डों का उत्पादन करवाना प्रतिबंधित है। विदेशो में जैविक कुक्कुट पालन एवं उत्पादन व्यवसायिक हैचरी में हो रहा है, क्योंकि जैविक चूजों का प्राकृतिक तरीके से उत्पादन अधिक महंगा एवं कम उपलब्धता एवं कम उत्पादन वाला है।

**कुक्कुट आवास प्रबंधनः** जैविक कुक्कुट पालन में प्राकृतिक आवास उपलब्ध करना चाहिए जिसमे वह अपना प्राकृतिक व्यवहार प्रदर्शित करे तथा साथ ही साथ स्थायी आवासों की तुलना में गतिशील आवासों का उपयोग भी किया जा सकता है, क्योंकि गतिशील आवासों का मुख्य लाभ यह है कि इसमें पक्षी हर समय स्वच्छ घास वाले स्थान पर होता है एवं मृदा जनित परजीवीयों का खतरा कम होता है। जैविक कुक्कुट पालन हेतु पक्षियों को पिंजरों में ना रखकर उन्हें गहरे लीटर (बिछोना) वाले आवासों में रखना चाहिए। कृत्रिम रोशनी की मात्रा उतनी ही देवें जितनी की प्रमाणित संस्थाएं सुझावित करती है।

**आहार प्रबंधनः** जैविक कुक्कुट पालन में प्रमाणित जैविक आहार ही खिलायें तथा आहार के सभी भाग जैविक खेती से पैदा हो लेकिन कुछ विटामिन एवं खनिज तत्व पूरक पदार्थ के जो कि भोजन का 5 प्रतिशत भाग उपयोग में लिया जा सकता है। जैविक कुक्कुट पालन में मछली का चूरा भी जैविक खाद्य में उपयोग कर सकते हैं यह आवस्यक अमीनों अम्ल की प्रचुरता का स्त्रोत है लेकिन इनका उपयोग सीमित करना चाहिए क्योंकि यह महंगा है तथा कुक्कुट मांस में मछली की गंध पैदा करता है। अंकुरित अनाज भी विटामिन का एक अच्छा स्त्रोत है जो कि विटामिन एवं अमीनों अम्लों की जरूरत को पूरी कर सकता है। पक्षियों को बाहर खुले वातावरण युक्त चारागाह में स्वच्छ वायु एवं प्रर्याप्त खाद्य तथा स्वच्छ पानी उपलब्ध करवाये जायें पक्षियो की चोंच काटने की प्रथा अनुचित है परन्तु कुछ प्रमाणित सस्थाएं अभी भी चोंच काटने हेतु स्वीकृति देतीं हैं। चोंच काटी भी जाऐ तो 5 मी.मी. से अधिक नहीं। जैविक कुक्कुट पालन में लेयर पालन हेतु चूने के पत्थर के बारीक टुकड़े, मार्बल ग्रिट (मंजिया) ओएस्टर कवच भी एक अच्छा कैल्सियम का स्त्रोत है। संश्लेषित अमीनों अम्लो का उपयोग जैविक खाद्य में प्रतिबंधित है अतः अनिवार्य अमीनों अम्ल की पूर्ति हेतु जैविक सोयाबीन, स्किम मिल्क पाऊडर, मक्का ग्लूटेन इत्यादि उपयोग कर सकते है।

**स्वास्थ्य प्रबंधनः** जैविक कुक्कुट पालन में उपचार में सिर्फ प्राकृतिक औषधीयां, आर्युवेद एवं होम्योपेथी तकनीक ही स्वीकार्य है। प्रतिजैविक का इस्तेमाल प्रतिबंधित है, टीकाकरण भी तभी करना चाहिए जब कोई ऐसा ज्ञात संक्रमण हो जो कि अन्य तरीकों से कम ना हों तथा उस क्षेत्र के लिए गंभीर संभावित खतरा हो। खाद्य एवं आवास प्रबंधन अधिक से अधिक प्राकृतिक परिस्थितियों अच्छी प्रतिरक्षा एवं स्वास्थय की उपलब्धि हों ।

**रिकॉर्ड प्रबंधनः** रिकॉर्ड विश्लेषक, फार्म मालिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं के लिए सूचना का स्त्रोत होता हैं अतः प्रजनन रिकॉर्ड, चूजे खरीद का रिकॉर्ड, जैविक खाद्य पदार्थों के इस्तेमाल से बने राशन का रिकॉर्ड, जैविक खाद्य पदार्थ खरीद रिकॉर्ड, जैविक कुक्कुट चारागाह रिकॉर्ड, स्वास्थय सहायक प्राकृतिक औषधी रिकॉर्ड, स्वच्छता सहायक संसांधन रिकॉर्ड, जैविक अण्डे उत्पादन का मासिक रिकॉर्ड, जैविक मांस उत्पादन एवं बिकवाली रिकॉर्ड रखने चाहिए।

## जैविक कुक्कुट पालन में व्यापक प्रमुख बाधाएं

- ❖ सामान्तया भारत में उचित नस्लों की उपलब्धता नहीं है एवं हैचरी इकाई की कम उपलब्धता होने से चूजों की उपलब्धता में कमीं है।
- ❖ जैविक कुक्कुट पालन में परिवहन खर्चे की अधिकता तथा परिवहन के दौरान कुक्कुट कि मृत्यु से होने वाले नुक्सान।
- ❖ एंटीबायोटिक दवाओं का लम्बे समय तक उपयोग करने से कुछ बैक्टीरिया के लिए एंटीबायोटिक प्रतिरोध आ जाता है परिणामस्वरूप उपचार में समस्या आती है इन पशुओ के दूध का सेवन करने से एंटीबायोटिक प्रतिरोध का जोखिम रहता है।
- ❖ हानिकारक बग द्वारा प्रतिरोधी जीन को हस्तांतरित कर देता है जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है।
- ❖ हार्मोन्स की प्रतिबंधित सीमा से अधिक उपयोग कैंसर उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है और सार्वजनिक स्वास्थ के लिए खतरा है।

**जैविक कुक्कुट पालन उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु रणनीतियांः** जैविक कुक्कुट पालन में विशेष नस्ल एवं प्रजातियां तैयार करना जो कि जैविक पालन के अनुकूलन हो तथा ग्राहक को स्वीकार्य हो। जैविक कुक्कुट का उत्पादन करने वाले कुक्कुट पालन किसानों के लिए मूल्य प्रोत्साहन करना तथा उपयुक्त क्षेत्रों को चिह्नित करना जिससे इसे बढ़ावा दिया जा सके। जैविक कुक्कुट उत्पादन प्रक्रियाओं का पालन करने के लिए और फायदे हेतु शिक्षित किया जाना। एंटीबायोटिक कृत्रिम उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से बचने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। संश्लेषिक कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग न करने हेतु शिक्षित किया जाना चाहिए। उपभोक्ताओं का विश्वास बनाने के लिए नियमित जाँच करना। जैविक कुक्कुट पालन के लिए वनस्पति एवं जैव प्रोटीन स्त्रोतों कि आवश्यकता एवं उपलब्धता पर जोर देना चाहिए।

**डॉ. संजय सिंह एवं डॉ. रेणु कुमारी**
**सहायक निदेशक, राजुवास, बीकानेर**

# गाय–भैंसों का उन्नत प्रबंधन

कृषि एवं पशुपालन का अपने भारत देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। पशुपालन विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, नियमित आय एवं पोषण सुरक्षा के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ बनाता है। सर्वाधिक पशुधन संख्या के साथ दूध उत्पादन में भी हमारा देश विश्व में प्रथम स्थान पर है लेकिन हमारे देश में प्रति पशु औसत दूध उत्पादन कम है और इसे बढ़ाने के लिए हमें पशुओं के स्वास्थ्य, पोषण, प्रजनन एवं प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पशुधन प्रबंधन के विभिन्न आयामों एवं उनसे संबंधित उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर पशुपालक कम खर्च में अधिक उत्पादन और आर्थिक लाभ ले सकते हैं।

**स्वास्थ्य प्रबंधनः** गाय–भैंस पालन सदैव ही लाभप्रद साबित होगा यदि वे स्वस्थ होंगे। पशुपालकों को इनकी प्रमुख बीमारियों एवं इससे बचाव के बारे मे जानकारी होना आवश्यक है। इनके स्वास्थ्य व उत्पादन को उचित स्तर पर बनाए रखने के लिए स्वास्थ्य प्रबंधन से संबंधित उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता है।

- ❖ स्वस्थ गाय–भैंस को संक्रमित पशु के सम्पर्क में नहीं आने देना चाहिए। रोगी पशु को तुरन्त स्वस्थ पशु से अलग कर देना चाहिए।
- ❖ नए खरीदे गये पशु को बाड़े में मौजूद अन्य पशुओं से 15–20 दिन तक अलग रखना चाहिए।
- ❖ गाय–भैंस को मानसून से पूर्व एवं बाद मे गोबर की जांच करवाकर कृमिनाशक दवा अवश्य देनी चाहिए। खुरपका–मुंहपका, गलघोटू, लंगडा बुखार एवं लम्पी स्किन रोग जैसी संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए।

पशु के रोगग्रस्त होने पर पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार प्राथमिक पशुचिकित्सा की दवाओं का उपयोग करना चाहिए एवं आवश्यकता पड़ने पर कुशल पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए।

**पोषण प्रबंधनः** पशुपालन व्यवसाय में उन्नत पशुधन पोषण का बहुत ही अधिक महत्व होता है क्योंकि पशुपालन व्यवसाय में कुल खर्च का लगभग आधे से दो तिहाई उनके पोषण पर खर्च होता है। उन्नत पोषण प्रबंधन से इनकी उत्पादकता के साथ–साथ प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। इसके लिए निम्न बातों का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है।

- ❖ नवजात वत्सों को जन्म के 24 घंटे के अन्दर शरीर के कुल भार का दस प्रतिशत खीस अवश्य पिलाना चाहिए जिससे उनमे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढे।
- ❖ गाय और भैंस में हरे एवं सूखे चारे का अनुपात लगभग 3:1 रखना चाहिए। इन्हें शरीर के वजन के अनुसार पोषण देना चाहिए। एक व्यस्क गाय–भैंस को दैनिक जरूरत के हिसाब से उसे निर्वाह पोषण के रूप मे 15 किलोग्राम हरा चारा एवं लगभग 5 किलोग्राम सूखा भूसा अवश्य देना चाहिए।
- ❖ बढ़ती हुई मादा वत्सों को 1/2 से 1 कि.ग्रा दाना प्रतिदिन देने से उनकी शारीरिक वृद्वि के साथ–साथ प्रजनन क्षमता भी विकसित होती है।
- ❖ ग्याभिन अवस्था मे गर्भधारण के छठे माह से गाय/भैंस को एक कि.ग्रा दलिया/बांट प्रतिदिन देना चाहिए। दुधारू गायों को प्रति 3 लीटर दूध पर एवं भैंसों को प्रति 2.5 लीटर दूध पर एक कि.ग्रा दलिया/बांट अलग से देना चाहिए।
- ❖ पशुओं को दिये जाने वाले दलिया/बांट में प्रति एक क्विंटल मे एक कि.ग्रा नमक तथा 2 कि.ग्रा खनिज लवण मिश्रण अवश्य मिलाना चाहिए।
- ❖ गौ एवं भैंस वंश को ताजा पानी एक दिन में कम से कम दो बार तथा दुधारू पशु को तीन बार अवश्य पिलाना चाहिए।

**प्रजनन प्रबंधनः** प्रजनन प्रबंधन का डेयरी व्यवसाय में विशेष महत्व होता है। सफल डेयरी व्यवसाय हेतु गाय व भैंसों का दुग्ध स्त्रवण काल 300 दिन, शुष्क काल 60 दिन, ब्यांत अतंर गायों में 365, एवं भैंसों में 400 दिन के लगभग होना चाहिए। गौ एवं भैंस वंश के कुशल प्रजनन प्रबंधन हेतु पशुपालकों को निम्न बातों का ध्यान देना आवश्यक है।

- ❖ गायों/भैंसों की नस्लों के सुधार हेतु हमेशा उन्हें उन्नत नस्ल के सांडों/पाडो/कृत्रिम गर्भाधान द्वारा गर्भित कराना चाहिए। देशी गोवंश एवं भैंसों को ताव में आने के 12 से 18 घंटे के बीच जब की संकर नस्ल की गोवंश को 24 से 30 घटे के बाद कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिए जिससे गर्भधारण की संभावनाएं बढ़ जाती है। कृत्रिम गर्भाधान के बाद यदि पशु ताव में न आए तो 2–3 माह बाद अनुभवी पशुचिकित्सक से गर्भ परीक्षण अवश्य करवाना चाहिए।
- ❖ गर्भकाल छः माह का होने पर 1 कि.ग्रा दाना प्रतिदिन बढ़ा देना चाहिए एवं आहार मे 50 ग्राम खनिज लवण मिश्रण प्रतिदिन अवश्य देना चाहिए।
- ❖ बहुत सी गाय–भैंस अधिक उम्र के होने के पश्चात् भी या ब्याने के पश्चात् बहुत लंबे समय तक ताव में नहीं आते। इनमे यह अवस्था संतुलित आहार, खनिज लवणों की कमी व अन्तः परजीवियों के प्रभाव के कारण या कुछ अन्य बीमारियों की वजह से भी हो सकती है। इस तरह की परिस्थिति में पशुचिकित्सा विशेषज्ञ से जांच करवाकर उनके निर्देशानुसार उपचार करवाना चाहिए।
- ❖ ब्याने के तुरंत बाद यदि नवजात वत्स की नाभि नलिका न टूटी हो तो शरीर से दो से 3 सेंटीमीटर की दूरी पर एक संक्रमणा मुक्त धागे से बांध देना चाहिए और इसके पश्चात् किसी संक्रमण मुक्त कैंची या नए ब्लेड की सहायता से एक सेंटीमीटर दूरी पर काट देना चाहिए। कटे स्थान पर एंटीबायोटिक लोशन/बीटाडीन अवश्य लगाना चाहिए। पैदा हुए नवजात की नाक और मुंह में जमा स्त्राव को साफ करना चाहिए।
- ❖ गाय–भैंस के ब्याने के बाद गुड़, सौंठ, अजवाइन, मेथी, सतावर आदि देना चाहिए एवं युटेराटोन/यूट्रासेफ/इनवोलॉन नामक औषधि पिलानी चाहिए जिससे कि गर्भाशय की सफाई सही हो सके।
- ❖ ब्याने के बाद प्रथम ऋतु–काल को छोड़ कर बाद में उसे 60 से 90 दिनों के भीतर पुनः गर्भधारण कराना चाहिए।

**सामान्य प्रबन्धनः** गौ व भैंस वंश को स्वस्थ रखने एवं उनके उत्पादन स्तर को उचित बनाए रखने में सामान्य प्रबंधन का भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

- ❖ पशुशाला के दरवाजों पर चूना या फिनायल का घोल डालना चाहिए जिससे रोग का प्रसार न हो।
- ❖ जहां तक संभव हो, दुधारू, ग्याभिन तथा प्रसववती मादाओं तथा छोटे वत्सों को अलग–अलग रखना चाहिए ताकि उनकी देखभाल सुचारू रूप से हो सके।
- ❖ प्रत्येक गौ एवं भैंस वंश के वृद्वि–दर, स्वास्थ्य, पोषण, प्रजनन एवं उत्पादन संबंधी रिकार्ड रखना चाहिए।
- ❖ दूध दुहने से पहले एवं बाद में थनों को एक प्रतिशत पोटेशियम परमैंगनेंट घोल से धोना चाहिए ताकि थनों में जीवाणुओं का प्रवेश रूक सके एवं वे थनैला रोग से मुक्त रहते हुए स्वच्छ दुग्ध का उत्पादन करते रहे।
- ❖ गाय एवं भैंस के नर वत्सों जिन्हें प्रजनन हेतु प्रयोग नहीं लेना हो, का बधियाकरण करवाकर कृषि एवं यांत्रिक कार्यो के उपयोग में ले सकते हैं।
- ❖ पशुपालकों को हमेशा अपने पशुओं का बीमा करवाना चाहिए जिससे डेयरी व्यवसाय मे आर्थिक क्षति का खतरा कम रहे।

गौ एवं भैंस पालन में उन्नत एवं वैज्ञानिक प्रबंधन की उन्नत तकनीकों को अपनाकर पशुपालक अपने गाय एवं भैंसों को स्वस्थ रखते हुए उनकी उत्पादकता को भी उच्चतम स्तर पर बनाये रख सकते हैं और आर्थिक प्रगति की अग्रसर हो सकते हैं।

**डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा एंव डॉ सीमा मीणा**
**पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा**

# प्रजनक सांडों की देखभाल एवं प्रबंधन

हाल के समय में अब वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रजनन में प्रयोग होने वाले सांडों का योगदान 70 प्रतिशत तक हो सकता है, हालांकि किसी भी डेयरी फार्म के दुग्ध उत्पादन में प्रजनक सांड का योगदान आधा होता है। सांड की उर्वरता और आनुवंशिक श्रेष्ठता गायों और भैसों की उत्पादन और पुनरूत्पादन क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

## सांड का चुनाव:

- सांड को उसके माता, पिता, दादी और परिवार के दुग्ध उत्पादन रिकार्डों को देखने के बाद चुना जाना चाहिए। इसे वंशावली चयन कहा जाता है।
- उस सांड की माता का आकार, नस्ल और दुधारू लक्षण सही था।
- सांड संक्रामक बीमारियों से मुक्त हैं, उनका सामान्य स्वास्थ्य अच्छा है और नियमित रूप से टीकाकरण किया गया है।
- युवा सांड अधिक प्रजनन योग्य और सक्षम होते हैं, इसलिए अधिक उम्र के सांड को नहीं चुनना चाहिए।
- सांड का शरीर लंबा, ऊँचा और उसके शरीर की त्वचा चमकीली और पतली होनी चाहिए।
- सांड की सिर चौड़ा होना चाहिए, कंधे ऊँचे होने चाहिए, पुष्ठे चौड़े होने चाहिए और पीठ लम्बी होनी चाहिए।
- सांड का वृषण कोष बड़ा होना चाहिए और इसकी परिधि भी बड़ी होनी चाहिए। शोधों के अनुसार, बड़े वृषणकोष परिधि वाले सांडों का वीर्य उत्पादन अधिक होता है और इनसे पैदा हुई बछियों की उर्वरता अधिक होती है।

## पोषण प्रबंधन:

- प्रजनन करने वाले सांडों को अच्छी तरह का चारा तथा पर्याप्त मात्रा में दाना खिलाना चाहिए ताकि वे स्वस्थ, चुस्त और मोटे रहें।
- 18 महीने से 3 साल की उम्र के सांडों को शुष्क बात का 2.5 से 3 प्रतिशत प्रतिदिन खिलाना चाहिए, जिससे वे प्रतिदिन 700 से 800 ग्राम वजन विकसित कर सकें।
- प्रजनक सांड को हर दिन 12 से 15 किलो दाना, 25 से 30 किलो हरा चारा और 4 से 5 किलो सूखा चारा देना चाहिए।
- तैयार सांड को 1 से 2 किलो अतिरिक्त दाना खिलाना चाहिए।
- सांड को हर दिन 50 से 60 ग्राम खनिज लवण भी खिलाना चाहिए।
- सांडों को अत्यधिक साइलेज तथा सूखी घास खिलाने से उनका पेट बहुत बढ़ जाता है जो सम्भोग की क्रिया में बाधक बन सकता है।

## आवास प्रबंधन:

- सांडघर डेयरी फार्म के एक तरफ होना चाहिए। सांडघर का मादा शेड दूर बनाना चाहिए।
- प्रत्येक बाड़े में 3X4 मीटर की छत और 10X12 मीटर की खुली जगह होनी चाहिए। छायादार जगह की छत से लगभग 175 से 200 सेमी की ऊँचाई होनी चाहिए। साथ ही सांडों के व्यायाम के लिए एक आंगन भी बनाना आवश्यक है।
- सांडघर में प्रकाश और वेंटिलेशन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

## खुर प्रबंधन:

- खुरों की चोट और बीमारियाँ प्रजनक सांड की आरोहण और वीर्य स्खलन को प्रभावित करती हैं, इसलिए सांड के खुरों को हर छः महीने में ट्रीमिंग (खुर संवारना) करना चाहिए। बंधे सांड और कम व्यायाम करने वाले सांडों को अधिक ट्रीमिंग की आवश्यकता होती है।
- कुछ सांड, खासकर हॉल्सटिन नस्ल के सांड, खुर सडान्ध के प्रति बहुत संवेदनशील हैं। हर पखवाड़े ऐसे सांडों के खुरों की जांच करनी चाहिए और उचित उपचार देना चाहिए। 5–10 प्रतिशत कॉपर सल्फेट के घोल से सप्ताह में एक बार ऐसे सांडों के पैरों को धोना चाहिए।

## स्वास्थ्य प्रबंधन:

- स्वास्थ्य प्रबंधन बीमारियों से बचने के लिए सांड को विशेष देखभाल दी जानी चाहिए। सांड खरीदते समय उन्हें प्रमुख संक्रामक बीमारियों की जांच करनी चाहिए। सांडों को स्थानीय रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण करना चाहिए।
- 6 महीने की उम्र से खुरपका–मुंहपका, लंगड़ी और गलघोटू रोगों का टीकाकरण करना चाहिए। खुरपका–मुंहपका टीको को छः महीने के अंतराल पर दोबारा लेना चाहिए। गलघोटू और लंगड़ी के टीकों को हर वर्ष पुनरावृति करनी चाहिए।
- जिस क्षेत्र में थेलेरिओसिस और एंथ्रेक्स बीमारियां आम हैं, वहां थेलिरिया का टीकाकरण दो महीने की उम्र के बाद एक बार करना चाहिए। एंथ्रेक्स का पहला टीकाकरण तीन महीने बाद करना चाहिए और हर वर्षा के पूर्व करना चाहिए।
- उन्हें हर छः माह ब्रुसेल्लोसिस, विब्रिओसिस, ट्राईकोमोनिएसिस, ट्यूबर्कुलोसिस और जोन्स डिजीज की जांच भी करानी चाहिए।
- संक्रमण से बचने के लिए सांडों को हमेशा स्वस्थ गायों से ही संभोग कराना चाहिए। हर मैथुन के बाद, शिश्रन्मुन्दच्छद को नॉर्मल सैलाइन या एंटीसेप्टिक लोशन से धो देना चाहिए।

## सामान्य प्रबंधन:

- 6 महीने की उम्र में सामान्य प्रबंधन सांड को ओसर से अलग करना चाहिए।
- प्रजनक सांडों को हर दिन एक घंटे का व्यायाम कराना चाहिए। जिन सांडों को व्यायाम कराना संभव नहीं हो, उनके लिए 120 वर्ग मीटर का खुला क्षेत्र बनाया जाना चाहिए. इस क्षेत्र में वे स्वतंत्र रूप से विचरण कर सकेंगे। एक केंद्र पर बहुत सांड होने पर बुल एक्सरसाइजर उपयोग करना चाहिए। शोधों से यह बात प्रमाणित हुई कि नियमित व्यायाम सांड के वीर्य की मात्रा और गुणवत्ता को बढ़ाता है।
- प्रजनक सांड का वजन हर महीने रिकॉर्ड करना चाहिए।
- सांडों के बाडे की हर दिन सफाई करनी चाहिए। दैनिक रूप से उनके रहने के कमरों और फर्श की सफाई होनी चाहिए।
- सर्दी के मौसम में सप्ताह में एक या दो बार नर भैंसों के शरीर में सरसों के तेल से मालिश भी की जानी चाहिए।

## प्रजनन प्रबंधन:

- 1.5 से 2 साल की उम्र में संकर नस्ल के सांड को सप्ताह में एक बार प्रजनन कराना चाहिए।
- 2.5 साल से अधिक उम्र के सांड को हर सप्ताह दो बार प्रजनन कराना चाहिए।
- अगर गोपालक के पास उत्कृष्ट गुणवत्ता और वंशावली का सांड है, तो उसे वीर्य एकत्रीकरण और हिमीकृत वीर्य उत्पादन के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, जो गोपालक को धन दे सकता है।
- वीर्य जुटाने के लिए हमें सांड को विशेष प्रशिक्षण देना पड़ता है इस प्रक्रिया में सांड को टीजर पशु पर लगाया जाता है और कृत्रिम योनि के माध्यम से वीर्य प्राप्त किया जाता है।
- प्रातःकालः सांडों को प्रशिक्षण देने का सबसे अच्छा समय है। सांडों को अमदकालीय मादा या टीजर प्रशिक्षित करते हैं। कुछ दिनों तक सांड को टीजर के पास लगातार लेने से वे उनमें रूचि लेने लगते हैं। वे धीरे–धीरे उत्तेजित होने लगते हैं और टीजर पर आरूढ़ होते हैं जब वे यौन उत्तेजना का अनुभव करते हैं।
- सांड टीजर के पास पहुंचने पर यौन आकांक्षा को बढ़ाने के लिए विशिष्ट ध्वनियाँ की जाती हैं। जब सांड आरूढ़ हो जाते हैं और पूरी तरह से अपना शिश्र बाहर निकाल लेते हैं, तो एक प्रशिक्षित व्यक्ति कृत्रिम योनि को पकड़े हुए तेजी से उसके शिश्र को कृत्रिम योनि में डाल देता है। सांड कृत्रिम योनि में अपने वीर्य को स्खलित करता है, जो प्राकृतिक योनि की तरह महसूस करता है।
- सांड को प्रजनन या वीर्यदान के लिए तैयार करते समय उनकी शुद्धता पर खास ध्यान देना चाहिए। शिश्रमुन्दच्छद और सांड दोनों को अच्छे से धोना चाहिए।

शिश्रमुन्दच्छद के बड़े रोम को काटकर छोटा किया जा सकता है। सप्ताह में एक बार शिश्रमुन्दच्छद को एक हजार भाग जल में एक भाग पोटाशियम परमैग्नेट से साफ करना चाहिए। पोटाशियम परमैग्नेट लोशन से धोने के तुरंत बाद, शिश्रन्मुंदच्छद में तरल पैराफिन या कोई एंटीसेप्टिक लोशन लगाना चाहिए।

**डॉ. अभय कुमार मीना, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. चन्द्रशेखर सारस्वत**
**पशुधन अनुसंधान केंद्र, कोडमदेसर, राजुवास, बीकानेर**

# गर्मी के मौसम में पशुओं को तापघात से बचाएं

आने वाले गर्मियों के दिनों में वातावरण का तापमान काफी अधिक हो जाता है जिसकी वजह से गर्मी के मौसम में पशुओं का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। अधिक गर्मी में रहने की वजह से पशु तनाव में आ जाता है, जिसके कारण दुधारू पशुओं में दुग्ध उत्पादन असामान्य रूप से कम हो जाता है तथा पशु को विभिन्न तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। भैंसों एवं अमेरीकन गायों की चमड़ी काली तथा मोटी होने के कारण इनमें उष्मा व अवशोषण अधिक होता है जिसके कारण गर्मी के मौसम में ये पशु तापघात की चपेट में जल्दी आते हैं।

## तापघात क्या है:

हीटस्ट्रोक या तापघात गर्मियों से सम्बन्धित आपातकालीन समस्या है जो कि मुख्यतः वातावरण में तापमान परिवर्तन व पशुओं के तंत्रिका तंत्र में बदलाव की वजह से पशु के शरीर का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है जिसे तापघात या हीटस्ट्रोक के नाम से जाना जाता है।

## तापघात के लक्षण:

- ❖ पशुओं में मुख्यतः एक मिनट में 15 से 30 बार श्वांस लेने की प्रवृति होती है। अगर गर्मी के मौसम में पशुओं में श्वांस लेने की रफ्तार 50 से अधिक हो जाये तो ये हीटस्ट्रोक का लक्षण माना जा सकता है।
- ❖ तापघात से प्रभावित पशु सुस्त रहते हैं तथा अपना सिर नीचा रखते हैं व मुंह खोलकर श्वांस लेते हैं।
- ❖ प्रभावित पशु के मुंह से बार–बार लार गिरती है जिसकी वजह से पशु के शरीर से खनिज लवणों का क्षय होता है।
- ❖ पशु चारा खाना कम कर देता है तथा पशु को बार–बार पानी की प्यास लगती रहती है।
- ❖ पशु के शरीर का तापमान बढ़ने लगता है तथा दुग्ध उत्पादन अचानक से कम होने लगता है।
- ❖ पेसाब की मात्रा कम हो जाती है तथा नाक व नथूने सूखे रहने लगते हैं।
- ❖ पशु की गंभीर अवस्था में उल्टी, दस्त व बैचेनी बढ़ने लगती है।
- ❖ अत्यधिक तापमान के कारण पशु के मस्तिष्क पर असर पड़ता है तथा गंभीर परिस्थिति में पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

## तापघात का उपचार व रोकथाम:

- ➢ पशुओं को अत्यधिक मात्रा में (दिन में 4–5 बार) ठंडा पानी पिलायें।
- ➢ पशुओं को बर्फ के टुकड़े चाटने के लिए दें।
- ➢ पशुचिकित्सक की सलाह से पशु का उचित इलाज करवाएं।

## आहार प्रबंधन:

- ❖ गर्मी के मौसम में पशुओं को दाना–चारा देर शाम को तथा सुबह जल्दी देवें क्योंकि चारा खाने के बाद पशु के शरीर में उष्मा का उत्पादन होता है, जो कि तापघात का कारण बन सकता है।
- ❖ पशुओं को जितना हो सके हरा चारा खिलायें क्योंकि इसमें पशु के शरीर के लिए आवश्यक खनिज होते हैं तथा पानी की पूर्ति होती है तथा चारा पचने में भी आसान होता है।
- ❖ पशु को सूखा चारा कम से कम खिलायें एवम् पशु आहार में दाने की मात्रा अधिक रखें।
- ❖ पशु आहार में 40–50 ग्राम खनिज लवण, 40–50 ग्राम नमक व विटामिन अवश्य शामिल करे।

## आवास प्रबंधन:

- ❖ पशुओं का बाड़ा खुला व हवादार होना चाहिए तथा पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए कूलर व पंखों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे पशुशाला का वातावरण ठंडा बना रहें।
- ❖ कूलर व पंखे की व्यवस्था न होने पर टाट–बोरियां आदि भिगोकर पशुशाला में लगानी चाहिए ताकि हवा की वजह से पशुशाला का वातावरण ठंडा बना रहें।
- ❖ पशुशाला की छत पर बचा हुआ चारा, घास–फूस आदि डालकर रखना चाहिए ताकि छत ठंडी रहे।
- ❖ पशुओं को दिन में एक या दो बार अवश्य नहलाना चाहिए।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर हम पशुओं को तापघात से बचा सकते हैं।

**डॉ. दीपिका धूड़िया**
**सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

## निदेशक की कलम से...

# अधिक तेज गर्मी में घट सकता है पशुओं का उत्पादन

पशुधन से अधिक उत्पादन लेने के लिए इनकी सभी मौसम में उचित देखभाल करना जरूरी है। उत्तर पश्चिमी भारत विशेषकर राजस्थान में गर्मियां तेज व लम्बे समय तक होती है। गर्मियों में दिन का तापमान कभी–कभी 45 डिग्री से अधिक हो जाता है। ऐसे मौसम में पशु तनाव की स्थिति में आ जाते हैं, जिसका प्रभाव पशु की पाचन प्रणाली और दूध उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। गर्मी के मौसम में पशुओं की देखभाल में उचित ध्यान नहीं देने पर पशु के सूखा चारा खाने की क्षमता में 10–30 प्रतिशत और दूध उत्पादन की क्षमता में 10 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। साथ ही तनाव की वजह से गर्मी के मौसम में पशु की प्रतिरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। गर्मी के मौसम में नवजात पशुओं की देखभाल में तनिक भी असावधानी, पशु की शारीरिक वृद्वि, स्वास्थ्य, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा भविष्य में उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। गर्मी के मौसम में पशु की शारीरिक क्रियाओं में बदलाव जैसे–श्वसन गति का बढ़ जाना, पशु का हॉफना, मुंह से लार गिरना तथा पशु के शरीर में पानी की आवश्यकता बढ़ जाती है। ग्रीष्म ऋतु में पशुओं की उचित देखभाल अत्यन्त आवश्यक है। पशु के आवास को हमेशा साफ–सुथरा व हवादार रखें तथा पशुशाला की खिड़कियां–दरवाजें व अन्य खुली जगहों पर गर्म हवाओं से बचाव हेतु बोरी या टाट आदि लगा देनी चाहिए। पशुशाला में कबाड़ के सामान व भीड़–भाड़ नहीं होना चाहिए। गर्मी के मौसम में पशु के आहार का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। पशु को सूखा चारा प्रातः अथवा सांय के समय ही उपलब्ध कराना चाहिए तथा पशु के आहार में हरे चारे को अवश्य शामिल करना चाहिए। यदि पशुपालक पशुओं को चारागाह में लेकर जाते हैं तो प्रातः अथवा सायंकाल में ही पशुओं को चराएं। गर्मी में हरे चारे की कमी आ जाती है अतः पशुपालकों को हरे चारे की अधिक उपलब्धता के समय ''हे'' अथवा साइलेज के द्वारा चारे का संरक्षण भी कर लेना चाहिए। पशुओं को पर्याप्त मात्रा में दिन में कम से कम तीन बार पानी पिलाना चाहिए तथा पानी में थोड़ा नमक व आटा मिलाकर पानी पिलावें। इस प्रकार पशुपालक गर्मी के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल कर अपने पशुओं के उत्पादन को बनाए रखते हुए आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं।

**प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया,** निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

## ''धीणे री बात्यां''

**पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम**

**माह के तीसरे गुरुवार को**

**सायं 5.30 से 6.00 बजे तक**

**प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण**

**पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए**

**टोल फ्री हैल्पलाईन**

**1800 180 6224**

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया